एक निर्णय

मुझे नहीं मालूम कि इस खबर को तुम किस रूप में लोगे। लेकिन यह भी सच है कि मैं और आगे इस तनाव के साथ पुल-ऑन नहीं कर सकती। तुम्हारे साथ के पिछले डेढ़-दो साल स्लो पाइजनिंग में बीते हैं....तो यूँ समझ लो कि मुकुल के साथ मेरी शादी एक बार में आत्महत्या है। तुम शायद एकबारगी चौंकोगे इस खबर से....हाँ, अगर अकेले में बैठे हो तो, वर्ना अगर इस वक्त क्लब में चिट्ठी रिसीव की है तो तुम इसे पढ़कर चेहरे पर चौड़ी-सी मुस्कान लाओगे। अगर तुम्हारे दोस्त पूछेंगे कि क्या बात है, तो तुम बहुत स्वाभाविक और साधारण रूप में बताओगे कि तुम्हारी एक मित्र ने, जो काफी ज़हीन थी, जिसके फ्यूचर प्रास्पेक्ट्स बहुत अच्छे थे, एक ऐसे आदमी से शादी कर ली है जो निहायत अहमक है। लेकिन वह आदमी जो अहमक है, तुम्हारे नजरिये से उसमें कम-से-कम ईमानदारी है अपने प्रति। वह अहं के उस पर्वत के पीछे घिरे दुर्ग में नहीं रहता, जहाँ कभी भी कोई संवेदना का झोंका नहीं घुस पाता। तुमने मेरे अति संवेदनशील स्वभाव और भावुकता का कारण किसी प्रकार का प्रबल इन्फीरियारिटी कॉम्पलेक्स बताया था। मेरे काम्प्लेक्सेज, जिसका मैंने हमेशा सूक्ष्म-से-सूक्ष्म विश्लेषण किया, उसके कारण व स्वरूप के हर पहलू को पहचाना था, वह मेरे चेतन मस्तिष्क में था। अचेतन की गहराइयों में बैठा वह स्वभाव और व्यवहार की जटिलता और अस्वाभाविकता के साथ भूलभुलैया में भटकता नहीं था बल्कि हमेशा ऊपर रियलाइजेशन की सतह पर था, इसलिएं वह मेरे लिए परेशानी की चीज नहीं थी। लेकिन तुम्हारा अहं, जिसे तुम आत्मविश्वास समझते थे, इतनी जबरदस्त हीन ग्रन्थि का परिणाम था कि जिसे तुम कभी नहीं समझ पाए। यही वह चट्टान थी, जिसने हमेशा तुम्हारा स्वाभाविक बहाव रोका और तुमने इस चट्टान को ही अपने व्यक्तित्व की आधारशिला समझा। तुम्हें याद होगा, जब तुम्हारे सम्बन्ध मालती के साथ थे, उस समय मेरे और तुम्हारे बीच कितने फार्मल टर्म्स रहे। हालाँकि मैं और मालती हमेशा एक साथ हॉस्टल में रहे और मेरे सामने छः साल तुम मालती से सम्बद्ध रहे, लेकिन मैंने कभी तुम्हारे बारे में या तुम्हारे और मालती के सम्बन्धों की गहराई के बारे में

जानने की कोशिश नहीं की। पता नहीं क्यों मेरा हमेशा से ऐंटीमैन एटीट्यूड रहा है। मुझे हमेशा आदमी एक निहायत बेवकूफ जीव नजर आया है। कितना ही पढ़ा-लिखा, बुद्धिजीवी और मान-प्रतिष्ठा-प्राप्त आदमी क्यों न हो, लड़कियों की कम्पनी में हमेशा उसकी दशा यूँ होती है, जैसी हड्डी का टुकड़ा दिखाने पर दुम हिलाते हुए, कान झुकाकर चलने वाले कुत्ते की होती है। कोई लड़की स्वाभाविक खुलेपन से बात भर कर ले, पहली ही बार में यह जीव यूँ लिपट जाने का भाव दिखाता है मानो दुनिया में वही एक लड़की है, जिस पर वह पहले-पहल मर मिटा हो....और यह भाव इतना घिनौना, वितृष्णा पैदा करने वाला होता है कि बस....बात चाहे कितने ही बौद्धिक स्तर की क्यों न हो, बहस का विषय चाहे कामू हो या सार्त्र, सोशलिज्म हो या मार्क्सवाद, मॉडर्न आर्ट हो या चांद, नजर लड़की के शरीर पर दौड़ती रहेगी, मेजरमेंट्स का अंदाजा दिमाग में होता रहेगा और संवेदना लड़की की उपस्थिति मात्र से उत्पन्न गर्माहट का जायजा लेती हुई।

खैर, सम्बन्ध तुम्हारे और मालती के थे और मैं तुम्हारे आने पर हमेशा कमरा छोड़कर चली जाती थी....और हमेशा इस मामले से असम्बद्ध रही।

थोड़ा-सा अटपटा महसूस किया उस दिन, जब मैं कमरे में आना चाहती थी अपना पेन लेने कि मैंने मालती को कहते सुना, जो बिखरकर तुम पर बरस रही थी—क्या मैं तुम्हारी जागीर हूँ जिसे तुमने खरीद लिया है? अलां से मत बोलो, फलां से मत बोलो! तुम क्या सोचते हो कि कमरे में बन्द होकर तुम्हारी शक्ल देखने से मेरी रिसर्च पूरी हो जाएगी....? और मैं उल्टे कदमों से वापस चली आई। मैं तो इस इंतजार में थी कि कब मालती तुम्हारे साथ अपनी शादी की तारीख घोषित करती है और कहाँ यह उल्टा मामला! कुछ थोड़ी सहानुभूति मैंने महसूस की तुम्हारे लिए। पहली बार इस मामले पर मैंने मालती से बात की। उसने बहुत शान्त और स्थिर स्वर में कहा—मिनी, वह शख्स शादी के काबिल नहीं है। उसका निबाह गाँव की किसी दर्जा आठ पास लड़की के साथ हो सकता है, जो उसे भगवान मानकर पूजती रहे।

—लेकिन मालती, तुम इस बात से इन्कार नहीं कर सकतीं कि वह तुम्हें दिलो-जान से चाहता है। तुम्हारे लिए उसने माँ-बाप छोड़े, घर छोड़ा, क्या इसका भी कोई मूल्य नहीं?

—उसने माँ-बाप छोड़े, घर छोड़ा, क्योंकि उसका यह पहला अनुभव था, जिसके बहाव में वह एक शानदार हीरो की तरह सब सह ले गया। फिर क्या मैं उसे नहीं चाहती? लेकिन सहज चाहना ही सब कुछ नहीं, आपस में ऐडजस्टमेंट होना एक अलग मसला है। सच तो यह है मिनी कि वह शख्स केवल अपने आपको प्यार करता है। वह अपने में सुप्रीम है। अपने अस्तित्व, अपनी सत्ता के सामने वह किसी को भी नहीं स्वीकार कर सकता। वह मुझे अपनी राजसी सत्ता

की शोभा बढ़ाने के लिए महज एक हीरा बनाकर अपने ताज में सजाना चाहता है....अपने साथ बिठाकर अपनी कमजोरियों को दूर करने के लिए मेरा हाथ पकड़ना या मेरा सहारा लेने का एक एहसास भर उसके लिए बुरी तरह अपमानजनक है।

मुझे लगा कि तुम नहीं, वरन् मालती ही कहीं पर बहुत व्यक्तिवादी हो रही है। उसकी खुदगर्जी पर मुझे बहुत गुस्सा आया, पर ऐसा भी महसूस हुआ कि उसके इस व्यवहार के पीछे कोई अन्य कारण भी है। इसके एक महीने बाद मालती घर चली गई और लगभग छः महीने बाद पता चला कि उसकी शादी एक डॉक्टर से हो गई है और वह अमेरिका चली गई है उसके साथ।

•

उस दिन तुम कॉफी-हाउस में मिले, सिगरेट पीते, बाहर खिड़की से सड़क निहारते हुए। मुझे अपनी कज़िन का इंतजार करना था वहाँ। घुसते ही तुमको देखा। एक क्षण की हिचकिचाहट के बाद पैर स्वतः तुम्हारी मेज की ओर बढ़ गए। शायद मन में यह जानने की उत्कंठा थी कि मालती की शादी की बात तुम्हें मालूम है या नहीं। बातों-ही-बातों में मैंने मालती का जिक्र किया, तो तुमने उस विषय को बदल देना चाहा। मैंने फिर सूत्र पकड़ा और मालती की शादी की बात कही। तुम सचमुच हतप्रभ हो गए। फिर एकबारगी मुखौटा बदल, अपनी परिचित लापरवाही का प्रदर्शन करते हुए तुमने कंधे झटके और कहा—ओह, दैट्ज वेरी गुड। अच्छा हुआ, उसने शादी कर ली! मिस शर्मा आपको मालूम है, मैं और मालती अच्छे दोस्त थे लेकिन लगता है, शादी की हड़बड़ी में वह मुझे इनवाइट करना भूल गई। भई, आप मुझे उसका पता दीजिएगा। कम-से-कम बधाई तो भेज ही दूँगा....और तुम हँस पड़े ठहाका मारकर। मैंने मन-ही-मन तुम्हारे अभिनय की दाद दी। तुमने बनारसीबाग पार्क तक घूमने-चलने का आग्रह किया। तुम्हारी मनःस्थिति का अन्दाजा कर मुझसे इन्कार नहीं किया गया। हम बाग में पेड़ों के झुरमुट के पीछे थे। तुम कुछ खोये-खोये से लग रहे थे। अचानक मानो तुम सोते से जाग पड़े—मिस शर्मा, सुना था, आप कहानियाँ लिखती हैं। कभी सुनाइए न कुछ!

—हाँ, लिखती तो हूँ, लेकिन आप जैसे आलोचकों के सामने धज्जियाँ नहीं उड़वानी हमें अपनी।

—अरे, कैसी बातें करती हैं! मैं हर वक्त आलोचक नहीं हूँ साहित्य का.... और इस वक्त तो मैं सिर्फ एक दोस्त हूँ आपका। सच पूछिए, तो मुझे उम्मीद नहीं थी कि आप मुझे अपनी कम्पनी देंगी—और तुमने अपनी आँखें मेरे चेहरे पर गड़ा दीं। न जाने क्या ढूँढ़ रही थीं वे नजरें मेरे चेहरे पर। जाने कैसा भाव भरा था उन निगाहों में। मैंने बहुत अटपटा महसूस किया और उन निगाहों को बरदाश्त

न कर पाते हुए अपनी आँखें नीची कर लीं।

—अरे बाप रे! कितना बड़ा कीड़ा है आपकी साड़ी के ऊपर! तुम झपटकर मेरी ओर आए। एक झटके में मेरी साड़ी का पल्ला नीचे गिरा दिया तुमने और जब तक मैं वस्तुस्थिति को समझूँ, तुमने मुझे अपनी बाँहों में कसकर लपेट लिया और पागलों की तरह मुझे चूमने लगे।

यह सब एक पल में हो गया और जब मैंने अपने आपको तुम्हारे उस पागलपन के दौरे से, जो शायद इतना पशुवत था कि मेरा दम घोंट देता, मुक्त किया, उस समय मैं गुस्से में काँप रही थी। बमुश्किल मैं इतना कह पाई—मिस्टर राज, अपने होश की दवा कीजिए। आपने मेरी सहानुभूति का गलत मतलब लगाया....। और आगे के शब्द क्षोभ और अपमान की पीड़ा में दबकर रह गए। अपनी रुलाई रोकती मैं लगभग दौड़ती हुई चली आई।

दूसरे दिन तुम्हारा पर्चा आया—मैं बेहद शर्मिंदा हूँ, मुझे माफ कर दीजिए! मैंने कोई जवाब नहीं दिया और न तुमने मिलने की ही कोशिश की। लेकिन बिल्कुल ईमानदारी की बात यह थी कि मुझे तुम्हारी उस हरकत पर अब तनिक भी गुस्सा न था। भाव जो था मन में, वह असीम सहानुभूति और दया का था। सड़क पर चलता पागल अगर हमारे ऊपर ईंट उठाकर दौड़े तो हमें गुस्सा नहीं वरन् दया आती है....और तुम भी असीम दया के पात्र थे।

इसके बाद तुम एकबारगी पलटा खाकर ऊपर चढ़ने लगे। तुम्हारी बौद्धिक योग्यता और राजनीतिक क्षेत्र में मौलिक चिन्तन और विचारधारा हमेशा प्रभावजनित रही। यह तुम्हारी ही विचारधारा का प्रभाव था कि मालती एक अच्छी सोशल वर्कर हो गई थी और विशिष्ट राजनीतिक चेतना का अनुभव करने लगी थी। इस प्रकार तुम अपनी यूनिवर्सिटी में तथाकथित प्रगतिवादी वर्ग के अगुवा थे। इसके अतिरिक्त अपने विभाग में तुम अब लड़कियों के वर्ग में विशेष प्रिय हो चले थे। तुम्हारी क्लास में लड़कियों की भीड़ रहती थी और तुम उनके बहुत अच्छे हीरो थे। कारण, वे सभी सुविधाएँ, जो तुम उन्हें दे सकते थे उनकी पढ़ाई के सम्बन्ध में, खुले दिल से देते थे। कैंटीन में तुम हमेशा उनसे घिरे नजर आते थे और डेटिंग तो चलती ही थी। इसके साथ ही एक और बड़ा परिवर्तन जो तुममें हुआ था कि हर वक्त लड़कियों को नीचा दिखाना और जाहिर है, इसके लिए तुम्हें अपनी छात्राओं से ज्यादा अच्छे शिकार नहीं मिल सकते थे। इसलिए वे ही बेचारियाँ बलि का बकरा बनती थीं। तुम जो पहले कभी अपने स्टाफ में तथा छात्रवर्ग में बहुत सुसंस्कृत और लड़कियों के बीच झेंपू टीचर के रूप में प्रतिष्ठित थे, अब अत्यधिक फ्लर्ट और परवर्टेड माने जाने लगे। उन्हें अपने साथ ले जाकर पहले चाय पिलाना और फिर दस अन्य स्टाफ के लोगों के सामने उन्हें अपने व्यंग-बाणों से जलील करना तुम्हारा एक प्रिय खेल था। और वे लड़कियां....उन्हें तो किताबें मिलती थीं, नम्बर

मिलते थे, स्कॉलरशिप भी दिलवा देते थे तुम और फिर तुम्हारी पोजीशन भी तो थी, वे बेवकूफ लड़कियाँ, पढ़ाई के साथ-साथ हसबैंड-हंटिंग के चक्कर में इस उम्मीद में रहतीं कि क्या पता, तुम हाथ लग ही जाओ।

●

तुमसे मेरी दूसरी मुलाकात पिक्चर-हॉल में हुई थी। बार-बार के टूटते कहकहे और फुसफुसाहटें....मैंने बाध्य होकर इंटरवल की रोशनी में पीछे घूमकर देखा। तुम एक सस्ती-सी लड़की के साथ बैठे थे। दोनों के बीच में एक ही कोकाकोला था। मुझे देख एकबारगी तुम हिचकिचाए, पर फौरन तुमने उपेक्षित भाव से मुझे अनदेखा कर दिया और पुनः उस लड़की की ओर मुखातिब हो गए।

सो यह थी तुम्हारी सफलता! हर एक आगे बढ़ते कदम के साथ तुम दो कदम नीचे गिर रहे थे। यह थी तुम्हारी बौद्धिकता और प्रगतिशीलता! यह थी तुम्हारी चेतना और सूझ-बूझ! भौतिक सफलता के साथ-साथ तुम हर क्षण बिखर रहे थे, टूट-टूटकर खण्डित हो रहे थे। तुम अपने भीतर की शून्यता को जिस तेजी से भरना चाह रहे थे, वह और अधिक बढ़ती जा रही थी।

और वहीं बैठे-बैठे मैंने यह निश्चय किया कि तुम्हें बिखरने नहीं दूँगी। टूटने नहीं दूँगी। तुम्हें वह सब दूँगी, जो तुम चाहते थे और हमेशा से चाहा था। तुम्हारी रिक्तता और शून्यता को भरूँगी। मुझे मालूम था कि तुम उन लोगों में से हो जो बिना प्रेम किए जिंदा नहीं रह सकते। अपने आपको सम्पूर्ण प्यार और विश्वास के साथ किसी को दे देना तुम जैसे लोगों की सबसे सहज सुरक्षा होती है....और मैंने सोच लिया कि मैं तुम्हारे व्यक्तित्व के खण्डित भागों को उठाकर सहेजूँगी, उसे संवारूँगी, तुम्हारे आत्मविश्वास को मजबूत करूँगी, जो केवल भीड़ के सामने अभूतपूर्व था, लेकिन व्यक्तिगत और भावनात्मक स्तर पर बिल्कुल खोखला।

मैंने तुम्हें जबरदस्ती अपने निकट आने को मजबूर किया। तुमने शुरू में मुझे भी अपने वाक्‌चातुर्य से नीचा दिखाने की कोशिश की। तुमने यह सिद्ध करना चाहा कि मेरा सोचना, मेरी मान्यताएँ, मेरे सामाजिक मूल्य बहुत संस्कारी, दकियानूसी और खोखले हैं। मैं चुपचाप, मन-ही-मन मुस्कराती, तुम्हें बिना किसी विरोध के सुनती रही। मैंने तुम्हें हरचंद यह विश्वास दिलाने की कोशिश की कि मैं तुम्हें केवल इसलिए नहीं सुनती कि मुझे तुमसे कोई स्वार्थ है या कामना है, वरन् मैं केवल तुम्हारी बौद्धिकता से, तुम्हारे मौलिक चिंतन से प्रभावित हूँ। तुम मालती से अक्सर मेरे बारे में कहा करते थे कि मैं बहुत स्नॉब और इगोईस्ट हूँ और जहाँ तक बौद्धिकता का प्रश्न है, मैं मस्तिष्क से तुम्हारे आगे आत्मसमर्पण करती हूँ।

जिस दिन तुमने यह महसूस किया, तभी से तुम एकबारगी मेरी ओर झुक गए। तुमने अपनी समस्त बाह्य प्रकृति के द्वारा, अपने स्वभाव या चेतनाशील विचारधारा के द्वारा मुझे जीत लिया था और अब तुम्हें अपने भीतर के अति कमजोर और कराहते इंसान के लिए एक सहारा बहुत जरूरी चाहिए था वह सहारा, जो भावना का था, परस्पर विश्वास और सहानुभूति का था, संवेदना और निकटता का था।

तुमने जबरदस्त दोहरे व्यक्तित्व को ओढ़ा हुआ था। बिना सहारे के, बिना मधुर प्रेम-सम्बन्ध के तुम आगे नहीं बढ़ सकते थे, लेकिन तुम्हारा अहं इतना मजबूत हो चुका था कि तुम्हें इस बात को कभी चेतन रूप में स्वीकारने नहीं देता था। तुम्हारे स्वभाव में इस कदर सतर्कता और सावधानी का भाव भर गया था कि तुम मेरी हर बात को, हर क्रियाकलाप को शक और संशय से देखते थे। तुम मेरे कंधे पर हाथ रखकर आगे बढ़ना भी चाहते थे और साथ ही मुझे यह एहसास भी दिलाना चाहते थे कि कमजोर तुम नहीं, मैं हूँ और तुम मेरे साथ चलकर मुझ कमजोर इन्सान को सहारा दे रहे हो....और इसी में तुम्हारा अहं सन्तुष्ट होता था। तुम इस बात में भी सावधानी बरतना चाहते थे कि कहीं तुम्हारी अनुभूतियाँ, तुम्हारी भावनाएँ मुझ पर प्रकट न हो जाएँ और फिर मैं उसका गलत फायदा उठाकर तुमको डामिनेट न करने लगूँ और फिर हश्र मालती जैसा हो। तुम हर तरह से अपना अपर हैंड रखना चाहते थे। मुझे मालूम है, तुम मुझे बहुत चाहने लगे थे और चाहते हो लेकिन तुमने अपने चेतन मस्तिष्क में इस विचार को कभी महसूस नहीं किया। तुमने मेरे प्रति, मेरे क्रिया-कलापों के प्रति, मेरी उपलब्धियों और सफलताओं के प्रति हमेशा लापरवाही का भाव दिखाया।

मैंने यह महसूस किया, लेकिन मैं यह कभी नहीं भूली कि तुम सन्तुलित मानसिक अवस्था में नहीं हो, तुम्हारा अटपटा व्यवहार मेरे लिए चौंकाने वाला नहीं था। तुमने एक दिन मुझसे कहा कि मालती से स्वयं तुमने सम्बन्ध विच्छेद कर लिए थे क्योंकि वह बहुत व्यक्तिवादी थी अपने स्वभाव व व्यवहार में तथा तुम्हारी विचारधाराओं से वह असहमत ही नहीं, वरन् उनकी तीव्र प्रतिरोधी थी। लेकिन मुझे मालूम है कि सम्बन्ध विच्छेद तुमने नहीं, मालती ने किए थे। तुम्हें यह भी गवारा नहीं था कि मालती तुम्हारे अतिरिक्त दूसरों की ओर जरा भी ध्यान दे। तुम्हारी प्रगतिवादी विचारधारा और क्रियात्मकता में व्यावहारिक स्तर पर बहुत अन्तर था। मालती बहुत खुले दिल की थी। उसे तुम्हारा झूठा दम्भ बाद में असहनीय हो गया था। बाद के दिनों तुम हमेशा मालती को यह एहसास दिलाने

लगे थे कि वह जो कुछ है, तुम्हारी बदौलत है। यह सच है कि तुम भीतर से कहीं पर मालती से बहुत ज्यादा अटैच्ड थे और उसका जाना तुम्हारे लिए एक जबरदस्त हार्ट-ब्रेक था, लेकिन फिर भी सवाल उस वक्त व्यक्तित्व के टकरावों का था। फिर कौन झुकता? टूटन स्वाभाविक थी।

और सत्य तो यह है कि किनारे पर खड़े होकर, तटस्थ भाव से मैंने बीच सागर में तुम्हारी ओर रस्सी फेंकी थी, तुम्हें लहरों से बचा खींच लाने के लिए, लेकिन तुम्हारी गतिविधि, डूबना-उतरना तथा लहरों का उठना-गिरना देखते-देखते मैं इतनी निमग्न हो गई कि मुझे पत्ता ही नहीं चला कि कब मैं रस्सी के साथ सिमटने लगी और एक झटका खाकर मैं भी लहरों की थपेड़ में फँस गई, तब मुझे वस्तुस्थिति का एहसास हुआ। यही वह क्षण था, जब मुझे यह महसूस हुआ कि तुम्हारे साथ मैं अब तटस्थ नहीं हूँ। मैं शायद अब तुम्हें अपने से भी ज्यादा चाहती हूँ। तुम्हारी कमजोरियां अब मेरे लिए श्रद्धा का विषय बन गई। मैं हर वक्त, हर क्षण, तुम्हारे सामीप्य की कामना करने लगी।

मैंने अपने सम्पूर्ण हृदय की गहराइयों के साथ तुम्हें चाहा था और यह अनुभव मेरे लिए सर्वथा नया था। मुझे मालूम नहीं था कि कहीं पर सम्पूर्ण का शून्य में सिमट जाना भी अपने में कितना विशाल और आह्लादकारी है। अपना समस्त, बिना किसी शर्त और झिझक के किसी को दे देना स्वयं को कितना कुछ दे देता है। सच देखो, इसे दे देने से कितना कुछ मुझे मिला और साथ में तुम्हें भी। तुम्हारा पौरुष फिर गर्वोन्नत हो गया था एवं आत्मविश्वास और दृढ़ तथा अदम्य। सारे जग को जीत लाने की क्षमता इस दे देने ने तुम्हें प्रदान की थी।

लेकिन इसके बाद भी तुम अपना पहला अनुभव भूले न थे। तुम्हें यह ध्यान था, कहीं मैं भी तुम पर हावी न होऊँ। सच तो यह है कि तुम खुद अपने आपको अपने पास संजोकर नहीं रख सकते थे। निश्चय ही किसी अन्य की तुमने हमेशा आवश्यकता अनुभव की, जिसके हाथों में विश्वासपूर्वक स्वयं को सौंपकर तुम निश्चिन्त हो सको....उन हाथों में, जहाँ माँ की-सी सुरक्षा हो, मित्र का सहयोग और प्रिय का मधुर स्नेह हो। काश, तुम अपने पिछले सम्बन्धों के अवशेषों को जलाकर खत्म कर चुके होते तो संशय और अविश्वास के दबे अंकुर बार-बार तुम्हारे मानस पर न छा जाते। इसीलिए अब दिल और दिमाग से, अर्थात् सम्पूर्ण रूप से मुझे अपने अधिकार में पाने के बाद तुमने मुझे हर तरह से ठोकना-बजाना

शुरू किया।

तुम्हारी पहले की अवशेष कटुता को ध्यान में रखकर मैंने तुम्हारा कोई विरोध न किया। मेरा ख्याल था कि एक दिन तुम हर ओर से निश्चिंत और संतुष्ट होकर संतुलित हो जाओगे और तब तुम्हारा अंतरतम कठोर चट्टान की गुफा से निकल कर बाहर आएगा अपने वास्तविक, प्रेमाभिभूत और तरल रूप में और तब बहाव सहज और स्वाभाविक हो जाएगा।

लेकिन तुम मालती का बदला शायद मुझसे लेना चाहते थे। कभी भावावेश में तुम अपने हृदय के उद्गार प्रकट भी कर देते, तो फौरन उसके बाद तुम भीषण प्रतिक्रियावादी हो जाते। मसलन, एक दिन तुम मुझे बहुत शौक से अपना बगीचा दिखाने ले गए। गुलाब तुम्हें मालूम था, मुझे बहुत प्रिय है और तुमने गहरे सुर्ख लाल रंग के गुलाब का गुच्छा मुझे भेंट किया। मैं बता नहीं सकती अपनी खुशी की मात्रा, उस भेंट को लेकर। पहली बार तुमने मेरी पसन्द का ख्याल किया था। अकस्मात् मेरी नजर दूसरी ओर गई, जहाँ अधखिले पीले गुलाब झूम रहे थे। पीले गुलाब की संजीदगी मेरी कमजोरी है और पीले गुलाब भी मैंने तोड़ लिए। तुमने शायद हर्ट फील किया कि तुम्हारी पसन्द के सामने मैंने अपनी पसन्द को भी महत्त्व दिया, और दूसरे दिन मैंने देखा कि सारे पीले गुलाब के पौधे उखाड़ कर फेंके हुए थे।

●

छात्राओं के साथ तुम्हारी बेतकल्लुफी वैसी ही बरकरार थी। तुम्हारे आमंत्रणपूर्ण व्यवहार और जरूरत से ज्यादा खुले व्यवहार से किसी को भी गलतफहमी हो सकती थी, और नतीजा, लड़कियाँ हरदम तुम्हारे पास घिरी रहती थीं और तुम अपने अहं को सहलाते हुए बेहद फक्र और आजिजी से उनको टाल न पाने की अपनी असमर्थता बयान करते। मैंने सोचा कि स्त्रियों के सामीप्य की कामना पुरुषों में होती है, जिसकी वजह से वह उनके बीच इस तरह से व्यवहार करता है कि स्त्री समुदाय उसमें अधिक-से-अधिक दिलचस्पी ले और सान्निध्य दे, इसलिए मैंने तुम्हारी इस कमी को पूरा करना चाहा, पर उस दिन....

तुम्हारी एक छात्रा तुम्हारे घर पर तुमसे कुछ अपने नोट्स में मदद लेने आई। वह तुम्हारी शेल्फ से एक मोटी-सी किताब तुम्हारी ओर ला रही थी। अच्छे-भले तुम बैठे थे कि अचानक न जाने तुम्हें क्या सूझा और तुम उससे बोले—मिस कपूर, ज़रा अपने हाथ दिखाइए। असमंजस में पड़ी उस लड़की ने शायद मेरी उपस्थिति

में आश्वस्त हो अपने हाथ फैला दिए और तुमने यह कहते हुए कि इतने खूबसूरत हाथ, इतना बड़ा बोझ कैसे उठा लेते हैं, उसके हाथों को चूम लिया। उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया। उसकी दशा यूँ थी, मानो भरे बाजार में उसे बेइज्जत कर दिया गया हो। उसने अपनी नोट-बुक उठाई और बिना एक भी शब्द कहे चुपचाप चली गई। तुम ठहाका मारकर हँस पड़े....शायद सहज होने की स्थिति के लिए। तुम जो यन्त्रणा मुझे देना चाह रहे थे, तुम उसमें सफल हो गए। मैं गुस्से में अंधी हो गई। मैंने, जिसने एक बार संकल्प किया था कि हर दशा में, हर परिस्थिति में तुम्हें सुखी बनाऊँगी, तुम्हारे दोनों गालों पर कस-कसकर चाँटे लगाए और तुम्हें जंगली कहा। उसी वक्त मुझे लगा कि मैं बुरी तरह ठगी हुई हूँ। तुम्हारे उमड़ते-फैलते सैलाब के लिए मैं बार-बार बाँध बनाना चाहती थी....वह बाँध, जो मैंने पूर्ण आत्म-समर्पण से अपनी समस्त मानसिक चेतना को तुम्हारे प्रति शून्य करके बनाया था, वह तुमने हर बार तोड़ दिया। मुझे महसूस हुआ कि बाँध तो बनेगा नहीं, लेकिन तुम्हारे सैलाब में मैं अवश्य बह जाऊँगी। तुम मुझे नदी का द्वीप बनाना चाहते थे, जिसकी चट्टान से सर पटक-पटककर खत्म हो जाना ही मेरी नियति होती। मैं नदी का द्वीप न बनकर तुम्हारी चट्टान की वह मजबूती बनना चाहती थी, जो तुम्हारे बहाव को निर्मल, समतापूर्ण बनाता, उसे निर्दिष्ट दिशा की ओर इंगित करता। तुम और मैं दो ध्रुवों के समान हो गए। मैं जितना आगे बढ़ती तुम्हारी ओर, तुम उतने ही पीछे हटते चले जाते। दो छोरों का मिलना असम्भव-सा हो गया।

•

तुम पता नहीं, जुड़े या नहीं, लेकिन खुद को मैंने बुरी तरह से टूटा महसूस किया। तुमने मेरी यह स्थिति भाँप ली थी और अब, शायद इस क्लाइमेक्स के बाद, तुम सगर्व आते और अपने दोनों हाथ बढ़ाकर मुझे अपने पास खींच लेते, सहारा देते। वह एकनिष्ठा, जो पुरुष वर्ग केवल औरतों के हिस्से की चीज समझता है, मुझे देते। लेकिन अब यह मैं स्वीकार नहीं कर पा रही थी।

उसी टूटेपन को साथ लिए मैं दिल्ली चली आई मुकुल के पास। मुकुल, जो पहले लखनऊ में ही पत्रकारिता का कार्य करता था और अब दिल्ली में नए

लेखकों में से एक के रूप में प्रतिष्ठित हो रहा था, मेरे और तुम्हारे बीच के सम्बन्धों को जानता था। वह सदा से मेरे साथ मित्रवत था। उसने कभी तुम्हारे ऊपर कोई टिप्पणी नहीं की, लेकिन एक बार मेरा तुम्हारे प्रति समर्पित भाव देखकर उसने कहा था–मेरी समझ में नहीं आता कि तुम जैसी लड़की कैसे इस बात की इच्छा करती है कि कोई तुम्हें डामिनेट करे! एक ओर तुम राजनीतिक व सामाजिक रूप में औरतों के बराबरी के दर्जे की बात करती हो और दूसरी ओर प्राचीन सामन्ती परम्परा से जुड़ी हो....और उस समय मानो प्रेम का रहस्य समझाते हुए मैंने उसे जवाब दिया था–प्रेम क्या है, केवल दे देना ....अपना सब कुछ दे देना....सम्पूर्ण भाव से। हमारे पास सबसे मुश्किल चीज क्या है, जो हम देने में हिचकिचाते हैं? वह है हमारा अपनापन, हमारा अहं, अगर हमने यह अपनापन, यह अहं दे दिया स्नेहभावना से अभिभूत होकर, तो फिर इस त्याग के बाद अपने-आपको उस व्यक्ति के ऊपर इम्पोज करने की, हावी हो जाने की बात कहाँ आती है?

इसके बावजूद वह हमेशा मेरे साथ सहानुभूतिपूर्ण और मित्रवत रहा। तुमने बहुत बार उसे बेवकूफ और अहमक कहा, क्योंकि उसके बहुत-सी गर्ल-फ्रेंड्स नहीं थीं, क्योंकि वह अपने मित्रों के प्रति सदैव बहुत ईमानदार रहता था। दो दिन बाद ही उसने मुझसे साफ-साफ पूछ लिया कि क्या मैं तुमसे भागकर आई हूँ। बुरी तरह अपनी कमजोरी को छिपाने के प्रयत्न में असफल होकर मैं फूट-फूटकर रो पड़ी। रोने के लिए कन्धा था और थपकने के लिए दो स्नेहपूर्ण हाथ। न जाने कितना संचित क्षोभ, हार और अपमान का बोझ–सब कटकर, आँखों के जरिए बहकर निकल जाना चाहता था।

....और जिस दिन मैं लौटने लगी फिर लखनऊ को, मैं पहले की अपेक्षा बहुत संयत और सन्तुलित थी। स्टेशन पर अचानक मुकुल ने मुझसे विवाह का प्रस्ताव किया और कहा–और तो मैं कुछ नहीं कहता, लेकिन जो अन्तरंगता, जो आपस की अण्डरस्टैंडिंग, जो स्नेह की मधुरता और ईमानदारी तुम चाहती हो, वह मैं अवश्य तुम्हें देने का प्रयत्न करूँगा। सच कहती हूँ उस वक्त तक मेरे दिमाग में तुमको छोड़ देने का विचार तनिक भी नहीं था। अगर ऐसा ही होता, तो क्यों वापस लखनऊ तुम्हारे पास आ रही होती! लेकिन खड़े-खड़े एक क्षण में मैंने निर्णय ले लिया। मुकुल ने जो कुछ कहा, वह मिले या न मिले लेकिन तुम पर तो अपना सर्वस्व वार देने पर भी कुछ न मिला....और अगले स्टेशन तक जाकर मैंने गाड़ी से अपना सामान उतार ही लिया और वापस चली आई।